'मेईजी पुनःस्थापना'

जापान के इतिहास में मेईजी पुनः स्थापना का विशेष महत्व है। वस्तुतः जापान के निर्माण का बीजारोपण मेईजी पुनः स्थापना से ही शुरू होता है। इस काल में अनेक ऐसे कार्य हुये जिनसे जापान के राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आये और जापान आधुनिकीकरण के दौड़ में शामिल हो गया।

मेईजी पुनःस्थापना के लिये जापान की तत्कालीन आन्तरिक एवं वाह्य परिस्थितियाँ काफी हद तक जिम्मेवार रही है। जहाँ तक आन्तरिक परिस्थितियों का प्रश्न है मेईजी पुनःस्थापना के समय जापानी समाज में कई तरह के असंतोष व्याप्त थे। सर्वप्रथम सामन्तों के बीच काफी असंतोष था। जापान के अन्य सभी सामन्ती घराने तोकुगावा शोगुन के खिलाफ हो गये थे क्योंकि बड़े-बड़े सामन्तों पर अपना नियंत्रण कायम रखने के लिये शोगुन ने कई तरह के इन्तजाम किये थे जिससे उन्हें अपार कष्ट पहुँचता था। 'सान्किन कोताई' कानून के अनुसार सामन्तों को किले बनाने उनकी मरम्मत करने, लड़ाकू जहाज बनाने, सिक्का ढालने और यहाँ तक कि सामन्तों को शोगुन के इजाजत के बिना शादी विवाह करने तक की मनाही थी। सामन्तों को प्रत्येक दो साल पर चार महीने के लिये शोगुन की राजधानी येदो में हाजिर रहना पड़ता था। जब वे येदो से अपनी रियासत में वापस जाते थे तो उन्हें अपने पत्नी और बच्चों को बंधक के रूप में वहीं छोड़ देना पड़ता था। इससे प्रत्येक सामन्त को राजधानी में ही अपना घर बार रखना पड़ता था जो आर्थिक दृष्टि से भार स्वरूप था।

इतना ही नहीं असंतोष के और भी कारण थे। राज्य के ऊँचे-ऊँचे पदों पर नियुक्ति में भी शोगून बड़ा पक्षपात करता था। सभी बड़े पदों पर शोगून अपने तोकुगावा परिवार के लोगों को नियुक्त करता था। दूसरे शोगून द्वारा अन्य सामन्तों को आर्थिक रूप से भी दबाया जाता था जिनसे उनकी आर्थिक स्थिति दिनोंदिन खराब हो गयी। उन्हें मजबूर होकर अपने खर्च में कटौती करनी पड़ी तथा सामुराई सैनिकों को हटाना पड़ा। इससे सामुराइयों में भी असंतोष फैला। वे चोरी, डकैती करने लगे जिससे समाज में अव्यवस्था फैल गई। सामुराई अपनी स्थिति से एकदम असंतुष्ट थे और तत्कालीन व्यवस्था अर्थात तोकुगावा शोगून के प्रभुत्व में परिवर्तन चाहते थे।

उन्नीसवीं शताब्दी में जापान के व्यापार में पर्याप्त उन्नति हुई और एक नवीन व्यापारी वर्ग का उदय हुआ जो समाज का एक अत्यंत सम्पन्न वर्ग था। सामन्तों को अपनी आर्थिक जरूरतें पूरी करने के लिये इन व्यापारियों से कर्ज लेना पड़ता था, फिर भी समाज में व्यापारियों का स्थान सामन्तों के मुकाबले अत्यंत निम्न था। सामन्ती वर्ग का उनके प्रति हीनता का भाव व्यापारियों को काफी अखरता था। वे भी वस्तुतः इस स्थिति में परिवर्तन चाहते थे।

जापान का किसान वर्ग भी अपनी स्थिति से सन्तुष्ट नहीं था। सामन्ती व्यवस्था का सारा बोझ किसानों पर ही पड़ता था। वे करों के भार एवं शासन की सख्ती में पिसे जा रहे थे। लेकिन धीरे धीरे उनमें राजनीतिक जागरण आ रहा था और वे विद्रोह करने लगे थे। उनका यह विद्रोह सामन्तों एवं खासकर शोगून व्यवस्था के विरुद्ध होता था। इन विद्रोहों का अर्थ था किसान तत्कालीन

व्यवस्था के स्थान पर नवीन व्यवस्था के आकांक्षी थे।

शोगून व्यवस्था के प्रति विरोध के ऐसे ही वातावरण में जापान में विदेशियों का प्रवेश हुआ जिसने स्थिति को एकदम बिगाड़ दिया। सामन्त तथा आमजन जापान की स्वतंत्रता एवं संप्रभुता को पश्चिमी देश के पास गिरवी रखने के लिये शोगून को जिम्मेवार मानते थे। सामन्तों ने सम्राट को मेई को भी विदेशियों के विरुद्ध करके उनसे यह आदेश जारी करवा दिया कि शोगून 25 जून 1863 तक सभी विदेशियों को देश से बाहर निकालने की व्यवस्था करे। शोगून इसे दुरुह मानते थे परंतु चोशू कुल के सामन्त इसे आसान मानते थे। चोशू सामन्तों ने पहल करते हुये 25 जून 1863 को शिमोनोसेकी के जलडमरूमध्य से गुजर रहे एक अमेरिकी जहाज पर गोलाबारी करके क्षत विक्षत कर दिया। जवाबी कारवाई करते हुये अमेरिका ने जापान के दो जहाजों को नष्ट कर दिया।

ऐसे ही वातावरण में 14 सितम्बर 1863 को एक दूसरी घटना घट गई जब सातसूमा सामन्तों का जूलूस निकला और ब्रिटिश नागरिक रिचर्डसन, उनका सम्मान न करते हुये रास्ता नहीं छोड़ा। सातसूमा सामन्तों ने इसे अपना अपमान समझ उसकी हत्या कर दी। ब्रिटिश सरकार शोगून से एक लाख पौंड का हर्जाना मांगा तथा सातसूमा को भी हर्जाना देने को कहा। अंग्रेजी जहाज हर्जाना वसूलने सातसूमा की राजधानी कागोशीमा पहुँचे। उन्होंने नगर पर गोलाबारी की और एक जापानी जहाज डूबो दिया। इस घटना से जापान में विदेशियों के खिलाफ बड़ी घृणा पैदा हो गई।

चोशू सामन्त अपनी कमजोरी दूर करने हेतु सैनिक सुधार किये तथा सामूराई एवं सामान्य जनता की मिली जुली सेना संगठित की। यह एक महत्वपूर्ण घटना थी क्योंकि पहली

classmate
Date ______
Page ______

बार सेना में सामान्य जनों की भागीदारी दी गई। ऐसे ही वातावरण में शोगुन ने एक बड़ी सेना की मदद से चोशुओं को बुरी तरह कुचल दिया। शोगुन ने चोशु सामन्तों को अपने मिले जुले फौजी दस्ते को भंग करने का आदेश दिया। चोशू तैयार थे परंतु फौजी दस्ते ने हथियार डालने से इंकार कर दिया। जनवरी 1865 में चोशु फौजी दस्ते ने कई दफ्तरों पर कब्जा कर लिया और 12 मार्च को रियासत की राजधानी को अपने अधिकार में ले लिया। इस तरह चोशुओं ने क्रांति का बिगुल बजा दिया। शोगुन शासन ने चोशु पर पुनः आक्रमण कर दिया परंतु इस बार शोगुन बुरी तरह पराजित हुआ। इस घटना के बाद चोशू एवं सातसूमा सामन्त एक दूसरे के निकट आये तथा 7 मार्च 1866 को उनके बीच एक गुप्त सन्धि हुई जिसके द्वारा शोगुन व्यवस्था का अन्त करने का निश्चय किया गया।

इसी बीच जनवरी 1867 में तोकुगावा केइकी शोगुन बना जो प्रगतिशील विचारों का था और सबके साथ मिलजुल कर काम करना चाहता था। उसने कई प्रशासनिक सुधार भी किये। शोगुन को संभलते देख चोशू और सातसूमा के नेताओं ने उसे जल्दी से बलपूर्वक हटाने का निश्चय किया। फरवरी 1867 ई. में सम्राट कोमेई का देहान्त हो गया तथा पन्द्रह वर्षीय मुत्सुहीतो गद्दी पर बैठा। अनुभवहीन होने के कारण शोगुन विरोधी सामन्तों ने तुरंत उस पर अपना प्रभाव कायम कर लिया। 3 जनवरी 1868 को सातसूमा और चोशू की सेना ने शाही महल पर अधिकार कर सम्राट की शक्ति की पुनःस्थापना की घोषणा कर दी। सम्राट ने मेइजी उपनाम धारण कर लिया। इस घटना को मेइजी ईशीन (मेइजी पुनः स्थापना) कहते हैं।

तोकुगावा केइकी दूरदर्शी व्यक्ति था अतएव उसने इस परिवर्तन को मान लेने का निश्चय किया तथा राजधानी को शांतिपूर्वक छोड़ दिया। उसने सम्राट के पास अपना

त्यागपत्र भेज दिया। लेकिन अन्य तोकुगावा सामन्तों ने इसे मानने से इंकार कर दिया और अपना विरोध जारी रखा। शाही फौज इनके विरोध को आसानी से कुचल दिया। इस तरह समूचे देश पर सम्राट का एकछत्र शासन स्थापित हो गया तथा सदियों से चली आ रही शोगून शासन व्यवस्था समाप्त हो गई।

शोगून शासन के अंत होने पर शासन संचालन की दृष्टि से अप्रैल 1868 में एक नवीन विधान तैयार किये गये जिसमें पाँच धारायें थी -

(i) राज्य के मामलों पर विचार करने के लिये विस्तृत पैमाने पर सभायें स्थापित की जायेंगी और सभी सरकारी कार्यों का निर्णय जनमत के आधार पर होगा।

(ii) सभी वर्ग देश की योजना को सशक्त रूप से कार्यान्वयन के लिए आपस में एक हो जायेंगे।

(iii) जनता के सभी वर्गों को अपनी न्यायोचित आकांक्षाओं को पूरा करने का अवसर मिलेगा। जिससे कहीं कोई असंतोष न रहे।

(iv) युगों की असभ्य प्रथायें तोड़ी जायेंगी और हर बात न्यायसंगत और औचित्यपूर्ण सिद्धान्तों पर निर्भर होगी।

(v) समस्त जगत से ज्ञान प्राप्त किया जायेगा जिससे साम्राज्य या देश का कल्याण हो।

अप्रैल 1868 को सभी सामन्तों और दरबारियों ने इसका समर्थन किया और शपथ लेकर इसपर अपनी मुहर लगाई।

इसी क्रम में शासन संचालन के लिये सम्राट ने कुछ परामर्शदाता नियुक्त किये। ये सब के सब नौजवान थे और नये जोश के साथ काम करने पर दृढ़ थे। इन्होंने तेजी से पश्चिमी विद्या, संस्कृति, और जीवन पद्धति अपनाने का संकल्प लिया। इन व्यक्तियों के निर्देशन में एक केन्द्रीय संगठन का निर्माण किया गया।

इसमें सर्वोच्च प्रशासक, सर्वोच्च सभा, सहकारी सभा और सात विभागों की योजना थी। सभाओं में डेम्यो और सामुराइयों को रखा गया। राज्यसभा को तीन सदनों में बाँटा गया। सा-इन (वाम सदन), यू-इन (दक्षिण सदन) और सेई-इन (मध्य-सदन) को क्रमशः कानून बनाने मंत्रालयों को चलाने और आम देखभाल का काम करते थे। इतने पर भी सारी सत्ता अभी भी सम्राट और उच्च सामन्ती वर्ग के लोगों के हाथ में केन्द्रित थी। आगे चलकर इस व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष भी चला। लेकिन इन परिवर्तनों एवं नवीन व्यवस्थाओं के साथ 1868ई. में मेईजी पुनः स्थापना का कार्य सम्पन्न हो गया।

मेईजी पुनः स्थापना ने जापानी इतिहास को एक नयी दिशा दी। इसने न केवल जापान को मध्ययुगीन सामन्ती जड़ता से मुक्ति दिलायी बल्कि उसे आधुनिक राष्ट्र बनने के लिये प्रेरित किया।

...